

पिंजरे के पंजी

पिंजरे के पंजीरे.....तेरा दरद ना जाने कोई तेरा दरद
बाहर से तुं जामोस रहे,
तुं भीतर भीतर रोही रे...भीतर भीतर रोही .. तेरा दरद

कहेना सके तुं अपनी कहानी,तेरी भी पंछी कथा जींदगानी रे
विद्धिने तेरी कथा लीजी... आंसुमे कलम डुओय .. तेरा दरद

छुपके छुपके रोने वाले.. रजना छीपा के..... दिल के छाले रे
ये पथरका देश है पगले, कोई ना तेरा होय .. तेरा दरद